'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ९४ | वाराणसी, गुरुवार, २० अगस्त, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

सोपौर (कश्मीर) २९-७-'५९

* सियासत और मजहबी तरीकों से समस्या का हल नहीं होगा

ग्रामदानी गाँवों की योजना

हर कुनबे को काश्त करने के लिए जमीन मिलेगी। साल के आखिर में सब लोग अपनी फसल का एक हिस्सा गाँव के लिए दान देंगे, जिससे गाँव की बैंक बनेगी। बैंक में से बेवा, बच्चे, बूढ़े, बीमार इन सबके लिए दिया जायगा। इसी तरह गाँव-गाँव में स्वराज्य बनना चाहिए। देहात का मनसूबा देहली नहीं बनायेगी, देहात ही बनायेंगे। फिर देहली और श्रीनगर की हुकूमत देहात को मार्ग-दर्शन और मदद देगी।

तालीम का सही तरीका

बड़ी खुशी की बात है कि कश्मीर की हुकूमत ने तालीम मुफ्त कर दी है। तालीम मुफ्त याने बेकारी मुफ्त! आज की हालत में मुफ्त तालीम देने के बहाने बेकार बनाने के कारखाने खोले गये हैं। जो भी उनमें आना चाहें, आ सकते हैं और बेकार बन सकते हैं। इसलिए जहाँ हम तालीम मुफ्त कर देते हैं, वहाँ तालीम का तरीका वह नहीं होना चाहिए, जिससे बेकार बनें।

आज स्कूल-कालेजों में न अखलाकी तालीम दी जाती है, न रूहानी और न जिस्मानी। सिर्फ दिमागी तालीम ही दी जाती है। इसलिए इस तालीम का क्या उपयोग है? यहाँ तालीम मुफ्त है, तब भी गरीब के बच्चे स्कूल में नहीं जा सकते हैं, क्योंकि वे घर के कमानेवाले मेम्बर होते हैं। आज किसान अपने बच्चे को इसलिए पढ़ाना चाहता है कि उसे जो मेहनत करनी पड़ती है, उससे उसके बच्चे बच जायँ। अगर वे उससे बच जानेवाले होते तो दूसरी बात थी। लेकिन तालीम पाये १० लड़कों में से १ को भी काम नहीं मिलता है, बाकी सब तो बेकार रहते ही हैं; क्योंकि उन्हें कोई दस्तकारी नहीं सिखायी जाती। अगर वे खेत में काम करना चाहें तो भी नहीं कर सकते हैं, क्योंकि उन्हें जो तालीम दी जाती है, उसकी वजह से ठंड, धूप, बारिश, हवा सहन करने की उनमें आदत ही नहीं रहती। इसलिए अगर तालीम में यह सब सहन करने की आदत डाली जायगी, तभी यह मुफ्त तालीम आपको फायदा पहुँचायेगी, नहीं तो बर्बाद कर देगी।

यह कैसी जवानी?

जब मैं जवानों से कहता हूँ कि मेरे साथ घूमने आइये, तब वे कहते हैं कि हमसे नहीं बनेगा। अजीब बात है, मेरे जैसा बूढ़ा घूम सकता है, लेकिन ये जवान नहीं घूम सकते! इसलिए समझना चाहिए कि हमारी जिन्दगी मुलायम (सॉफ्ट) बनी तो कुल देश खतरे में है।

मैं चाहता हूँ कि हमारे बच्चे खेलें-कूदें, वर्जिश करें, खेतों में कुदाली चलायें, जिससे जिस्मानी मजबूती आये। उसके साथ-साथ रूहानी मजबूती भी आनी चाहिए। इस तरह तालीम में फर्क करना चाहिए। लेकिन कोई भी पार्टी इस तरफ ध्यान नहीं दे रही है।

तालीम को बदलना होगा

पार्टीवाले यही सोचते हैं कि हमें कितनी सीटें मिलेंगी और दूसरे को कितनी मिलेंगी? सीटों के सिवाय कोई बात ही नहीं है। आज हमसे जो लोग मिलने आये, उनमें हर कोई यही कहता गया। शरणार्थियों ने कहा कि सरकार में हमारे कोई नुमाइन्दे नहीं हैं। शिया लोग भी यही शिकायत करते थे कि हमारी छोटी-सी जमात है और हमारे कोई नुमाइन्दे नहीं हैं। हरिजन, पंडित वगैरह सब यही शिकायत करते थे। इस प्रकार एक-एक जाति और मजहब देखकर नुमाइन्दे चुने जायँ तो बड़ी आफत आयेगी। कोई नहीं कहता है कि आज का जो तालीम का तरीका है, उससे नुकसान हो रहा है, वह बदलना चाहिए।

जब हमने यहाँके वजीरे-तालीम से यह बात की तो उन्होंने मजेदार जवाब दिया कि "सभी लोग पढ़ेंगे तो सोचेंगे कि काम किये बगैर चारा नहीं तो फिर झक मारके काम करेंगे।" मैंने कहा कि बात तो ठीक है, लेकिन उनकी जिस्म के काम करने के लिए नालायक बन जाने पर वे क्या काम करेंगे? अगर बचपन से ही माँ और उस्ताद बच्चे से कहें कि तुम्हें बाहर नहीं घूमना चाहिए, अपने को महफूज रखना चाहिए तो बच्चे काम करने के लिए नालायक साबित होंगे। इसलिए तालीम में फर्क करना ही होगा। यह काम खुद अवाम करे। ◆◆◆

* इस प्रवचन का पूर्वांश अंक ९२ पृष्ठसंख्या ५९० पर है।

प्रार्थना-प्रवचन

श्रीनगर (कश्मीर) २-८-'५९

राजनीति के बदले लोकनीति की स्थापना करें

[श्रीनगर का यह प्रवचन पृष्ठ ५९६ से आगे चालू]

पहले दिन शाम को थोड़ी बारिश हुई। हम टेन्ट्स में थे और उसने अपनी ताकत का, सीफत का एक नमुना दिखाया, लेकिन दूसरे और तीसरे दिन आसमान बिलकुल साफ रहा। बारिश का नाम तक नहीं रहा दो दिन! उन दो दिनों में बारिश हुई होती तो हम कह नहीं सकते कि हमारी क्या हालत होती! हमारी फजीहत याने उसकी फजीहत। आखिर हम गुलमर्ग पहुँचे। मैं कहना यह चाहता हूँ कि मैं बीस साल की उम्र में हिमालय आने के लिए घर से निकला था और ६४ साल की उम्र में पहुँचा हूँ।

हमारी दौलत !

पहाड़ पर जहाँ हमने छाया हुआ बरफ देखा, वहाँ हमें शङ्कर भगवान की याद आयी। कैलास पर बरफ पर बैठे हुए ध्यान कर रहे हैं, ऐसी शिवजी की तस्वीरें हमने देखी थीं। हमने कहा, चलो हम भी बरफ पर बैठकर ध्यान करेंगे। साथ के साथी ने कहा कि शङ्कर जी बरफ पर बैठते थे, लेकिन बीच में मृगचर्म रखते थे, उस पर बैठकर ध्यान करते थे। मृगचर्म तो 'नान-कांडक्टर आफ हीट' है। इस तरह का एक मजाक भी उन्होंने किया। हमने कहा—ठीक है, उनके पास हिरन का चमड़ा था तो हम कम्बल बिछायेंगे। यों कहकर छोटा-सा कम्बल बिछाकर हमने २५ मिनट ध्यान किया। उस समय हमें जो तजुरबा हुआ, उसका बयान हम लफ्जों में नहीं कर सकते। सवा दो साल पहले हम कन्याकुमारी में थे। हमने हाथ में समुद्र का पानी लेकर प्रतिज्ञा की थी कि जब तक हिन्दुस्तान में ग्राम-राज्य नहीं होता, याने हिन्दुस्तान के गाँव अपने पाँव पर खड़े नहीं होते और जब तक बाबा के पाँव में ताकत रहेगी, तब तक बाबा की यह पदयात्रा जारी रहेगी। इस तरह उधर समुद्र के किनारे ध्यान किया और इधर पीरपंजाल पर भगवान शिवजी की मूर्ति सामने रखकर कुछ भजन गाये और पाँच मिनट ध्यान किया। हमारी जिन्दगी में जिन-जिन तजुरबों (अनुभूति) से हमें ताकत मिली है, उन सब तजुरबों में सबसे बेहतरीन तजुरबा हमें इस वख्त हुआ। हमने उससे बहुत ताकत पायी, दौलत पायी। वही दौलत लेकर हम आपके पास पहुँचे हैं।

हम अपने में ताकत महसूस करते हैं और यह भी महसूस करते हैं कि इस दुनिया में कोई ताकत ऐसी नहीं है, जो हमारे मार्ग में रोड़े डाल सके।

असली तीर्थ : जनता-जनार्दन

आपके दर्शन से हमें बहुत खुशी होती है। किसीने कहा कि क्या बाबा 'अमरनाथ' नहीं जायेंगे? हमने कहा हम 'अमर' हो गये हैं। अमरनाथ जाने का पहले 'हां' भी हो गया, बाद में 'ना'! आखिर सोचने की बात है कि हम किसके दर्शन के लिए यात्रा कर रहे हैं? क्या हम काशी या रामेश्वर की यात्रा कर रहे हैं? हम तो आपके दर्शन के लिए यात्रा कर रहे हैं। जो चेहरे हम सामने देखते हैं, वह कोई मिट्टी के पुतले हैं, ऐसा भास हमें नहीं होता है। वह तो अल्ला का नूर (प्रकाश) है, ऐसा हम महसूस करते हैं। इसीलिए हम आपके दर्शनों के लिए घूम रहे हैं। हमें 'अमरनाथ' जाने की जरूरत नहीं है।

मेरे प्यारे भाइयो, आपके दर्शन से हमें जो तसल्ली मिलती है, वह किसी भी तीर्थ के दर्शन से नहीं मिलती। यद्यपि हम जानते हैं कि एक जर्रा भी ऐसा नहीं है, जहाँ अल्ला की रोशनी नहीं है। यह हमारा सिर्फ 'इल्मुल यकीन' नहीं, बल्कि 'आयनुल यकीन' भी है।

तीसरे की ताकत

आप जानते हैं। महंमद पैगम्बर अपने एक साथी के साथ जंगल में भाग रहे थे। उनके पीछे दुश्मन की फौज आ रही थी, जिससे वे दुष्मनी नहीं करते थे। भागते-भागते वे बचने के लिए एक गड्ढे में उतर गये। उनका साथी घबड़ा गया। वह कहने लगा 'अब हमारा क्या हाल होगा? हमारा पीछा फौज कर रही है और हम सिर्फ दो हैं!' तब महंमद ने कहा 'तुम ऐसे गुरूर में, ऐसे भ्रम में मत रहो कि हम सिर्फ दो हैं। हम दो नहीं, तीन हैं। वह तीसरा मजबूत है, ताकतवर है। लेकिन दीखता नहीं, अदृश्य है। इसलिए हमें घबराने की कोई जरूरत नहीं है।'

हम भी यही महसूस करते हैं। जहाँ-जहाँ भी हम गये, पहाड़ों में, जंगलों में, धूप में, बारिश में, ठंड में, वहाँ-वहाँ भगवान हमारे साथ हैं। इसलिए हम ताकत महसूस करते हैं।

बड़ा उद्देश्य !

५ करोड़ एकड़ जमीन और ५ लाख ग्रामदान हासिल करने का काम भी हमने क्या खूब लिया है! कुछ लोग कहते हैं, अरे भाई! क्यों ऐसी जबान बोलते हो? जरा थोड़ा कम बोलो। ५ करोड़ एकड़ जमीन और ५ लाख ग्रामदान की बात करते हो, पर क्या तुम कभी कामयाब होओगे? हम कहना चाहते हैं कि हम कामयाब नहीं होना चाहते, हम नाकामयाब होना चाहते हैं। हम कोई छोटी चीज बोलना नहीं चाहते। हम पूर्ण चाहते हैं "पूर्णमदः पूर्ण मिदं।" यह भी पूर्ण है, वह भी पूर्ण है। हम कुल चाहते हैं, जुज नहीं चाहते। इस वास्ते इतना बड़ा काम लेकर निकले हैं। इस बड़े काम का हम पर कोई बोझ नहीं है। इसलिए शाम को जब सोने जाते हैं तो नींद आने में दो मिनट की भी देरी नहीं लगती। हमें किसी प्रकार की फिक्र नहीं होती। हम बिलकुल बेफिक्र सोते हैं। अगर अल्ला ने चाहा और आज की रात ही हमारे लिए आखिरी साबित हुई तो भी हमें दुःख नहीं होगा। आप हमारे शरीर का दहन, दफन या जो चाहें, सो कीजियेगा। हमारे मन में कतई यह खयाल नहीं रहेगा कि हम किसी ऐसी दूसरी जगह हैं, जो हमारी नहीं है। जिस जगह हमारी मौत होगी, वही हमारी जगह है। जहाँ हम जन्मे, वह हमारी जगह नहीं है; बल्कि जहाँ हमारी मौत हुई, वह हमारी जगह है। इसलिए हमारा इस जमीन पर उतना ही प्यार है, जितना किसी भी जमीन पर हो सकता है।

हमने 'नारा' नहीं कहा। हमारा 'कौल' "जय-जगत्" कहा है। कहने में बड़ी खुशी होती है कि हिन्दुस्तान की हर कौम ने इसे उठाया है। दस साल में हम 'जय-हिन्द' से 'जय-जगत्' तक पहुँचे हैं, इतनी तरक्की की है। तरक्की बाहरी नाप से

वे उसके मानी नहीं जानते थे और न जानने की जरूरत ही महसूस करते थे। उनके गुरु ने उन्हें मन्त्र दिया था कि कुरान पढ़ो। फिर और कुछ पढ़ने की जरूरत नहीं है। जो पढ़ते हो, उसके मानी भी जानने की जरूरत नहीं है। कुरान बस है। उसके इफ्तेदाह (आरम्भ) में 'बिस्मिल्लाहि रहमानिर्रहीम' आता है और आखीर में 'अम्मास—' आता है। शुरू में 'ब' और आखिर में 'स' तो 'बस' हो गया। इससे ज्यादा जानने की कतई जरूरत नहीं है। मुल्ला भी यही कहता है और वेद पढ़नेवाला भी यही कहता है। कुरान के 'सूरेजुमा' में गधे की मिसाल दी है, जिस पर किताबें लादी हुई हैं। जो किताबों का बोझ उठाता है, लेकिन उस पर अमल नहीं करता, उसको गधे की मिसाल लागू होती है। इन्सान को किताबों की मदद जरूर होती है, लेकिन उस मदद की भी एक हद होती है। हम उस हद से ज्यादा उसमें फँस गये तो खत्म हो जाते हैं। फिर तो यही कहना पड़ता है कि 'किताबें डाल पानी में। पकड़ दस्तू फरिश्तों का।' 'गुलाम उनका कहाता जा' के बदले हम कहते हैं 'साथी उनका कहाता जा'। यह जो विचारों की गुलामी है, उससे बदतर कोई गुलामी नहीं हो सकती। इसलिए हमें अपना दिल और दिमाग बिलकुल आजाद रखना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि पुराने तजुरबों का फायदा न उठायें।

खुद को पहचानो

यह सब करना उस्तादों का काम है। उसके लिए उन्हें जरा दूर जाकर देखना चाहिए। उसीके लिए आसमान में घूमना चाहिए। अपना जो कुछ काम चलता है, उसे भूलकर, ताजा दिमाग लेकर घूमने जाइये। अपना घर, बच्चे, स्कूल, इम्तहान, पाठ्य-पुस्तकें आदि सब भूल जाइये। एक दफा अपने सारे लेबल छोड़कर घूमने निकलिये। मैं किसीका भाई, किसीका बाप, किसीका उस्ताद, किसीका किरायेदार, यह सब छोड़िये और सिर्फ 'मैं हूँ' इतना ही याद रखिये। मैं 'फलाँ हूँ' यह सब फलानापन पटक दीजिये, 'मैं हूँ' इतना लेकर आसमान में घूमिये। दुनिया में इन्सान के पाँव में यह एक जंजीर, बेड़ी कसकर बाँधी हुई है, जो उसे इधर-उधर जाने नहीं देती, सोचने नहीं देती, कुछ भी करने नहीं देती है। इसलिए इन सबसे जरा दूर जाइये। घर-संसार से, सियासत से और इस जिस्म से भी अलग होकर देखिये, तब पता चलेगा कि 'मैं कौन हूँ' मेरा रूप क्या है। जब तक हमने नहीं पहचाना कि मैं कौन हूँ, तब तक हम तालिबिल्म (विद्यार्थी) भी नहीं बन सकते हैं तो उस्ताद क्या बनेंगे? इसलिए आप इसपर गौर कीजिये कि मैं कौन हूँ। 'फलाने' का बोझ सिर पर रहेगा तो काम नहीं होगा। जब तक तुम खुद को नहीं पहचानते हो, तब तक क्या 'टीचते' हो? मैं कौन हूँ, यह सोचो और 'मैं' पर जितने पर्दे आ गये हैं, उन सबको हटा दो! दुनिया के झमेलों से, जिम्मेवारी से जरा अलग होकर अपने को पहले आसमान में ले जाने की बात मैं नहीं कर रहा हूँ, वहाँ तो सिर फूट जायेगा। बल्कि मैं तो कहता हूँ कि अपने को नजदीकवाले आसमान में ले जाओ।

परीक्षा विद्यार्थियों की नहीं, उस्तादों की होती है

आप कहेंगे कि यह विनोबा हमपर क्यों नाहक जिम्मेवारी डाल रहा है। हमारे लिए तो सब ऊपर से लिखकर आता है कि क्या पढ़ाना, कितना पढ़ाना। हफ्ते में पंद्रह घंटे अंग्रेजी, बारह घंटे गणित, नौ घंटे इतिहास, भूगोल—यह सारा तय होकर आता है और आखिर उसीके मुताबिक विद्यार्थियों की परीक्षा भी लेनी होती है। शिक्षणमंत्री से बात करते हुए मैंने कहा था:

> "आपको किसने बताया कि विद्यार्थियों की परीक्षा लेनी होती है। परीक्षा तो उस्तादों की लेनी होती है, विद्यार्थियों की नहीं। विद्यार्थी फेल नहीं होता है। उस्ताद फेल होता है। एक विद्यार्थी बारह साल की उम्र में आपके पास आया, सालभर आपके पास पढ़ा और तेरह साल का बना तो वह पास ही है। अगर वह ग्यारह साल का हुआ होता, तब फेल होता। लेकिन वह बढ़ गया, उसका दिमाग बढ़ गया, हड्डियाँ, जिस्म मजबूत हुआ, इस हालत में उसकी परीक्षा क्या लेनी है? परीक्षा तो उस्तादों की लेनी है।"

परीक्षा की दहशत

भारतन् कुमारप्पा हमारे साथ जेल में थे। मैंने एक दफा उनसे पूछा कि क्या आप रात में कभी ख्वाब देखते हैं। उन्होंने कहा: 'कई बार देखता हूँ। मेरे दिल में कतई शुबहा नहीं है कि अब कोई मेरा इम्तहान लेनेवाला है। लेकिन ख्वाब में मैं यही देखता हूँ कि मैं इम्तहान दे रहा हूँ। पेपर कैसे लिखा जाय, इसकी फिक्र है। सामने जाँचनेवाले खड़े हैं। यही मुझे दहशत है। फिर मैं जाग जाता हूँ तो फिक्र खत्म होती है। बचपन में परीक्षा की जो दहशत बैठ गयी, उसका दिल पर अभी तक असर है।'

आंधी शुरू हो गयी है, इसलिए मैं आपका ज्यादा वक्त नहीं लेना चाहता। मैं जो कहना चाहता हूँ कि खूब घूमो, वही बात यह आसमान और हवा भी कह रही है। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

श्रीनगर (कश्मीर) ३-८-'५९

सर्वोदय-विचार केवल अच्छा ही नहीं, व्यावहारिक भी है

इस विज्ञान के जमाने में छोटे-छोटे सियासी विचार नहीं चल सकेंगे, इसलिए हमारी यही कोशिश है कि राजनीति की जगह लोकनीति लायी जाय। वह कैसे लायी जाय, यही सवाल है। बहिश्त का वर्णन तो सभी कोई करते हैं, लेकिन बहिश्त तक पहुँचने के लिए सीढ़ी कहाँ है? हमारे विचारों को समझनेवाले अक्सर यही कहते हैं कि ये विचार अच्छे हैं। याने उसके अच्छे होने में किसीको शुबहा नहीं है, लेकिन क्या ये प्रेक्टिकल (व्यवहार्य) हैं, आज की हालत में क्या वे अमल में लाये जा सकते हैं? यही सवाल पेश होता है। जबसे 'सर्वोदय' शब्द निकला, तभीसे लोगों के मन में यह था कि यह शब्द, विचार अच्छा है, लेकिन शायद चलनेवाला नहीं हैं। हमारे आठ साल के काम का नतीजा यह हुआ कि लोगों के दिल में थोड़ा शक पैदा हुआ है कि शायद यह विचार कुछ अमल में भी लाया जा सकता है।

सहकार नहीं, सहयोग

पहले जो चीजें तोड़नेवाली थीं, वे ही विज्ञान के जमाने में जोड़नेवाली बन गयी हैं। इसलिए देशों की सीमाएँ टूटनेवाली हैं और टूट भी रही हैं। अब यह नहीं हो सकेगा कि छोटी-छोटी जमातें या देश अपने को अलग मानकर अपना चूल्हा अलग पकायें,

दुनिया से ताल्लुक न रखें और यह कहें कि दुनिया जिस ढंग से जाना चाहे जाय, हम अपने ढंग से जायेंगे। इन दिनों एक शब्द चलता है, कोएक्जिस्टेंस. जो बिलकुल नाकाफी है। इतने से काम नहीं चलेगा। अब तो कोआपरेशन (सहयोग) चाहिए। हम और आप अलग-अलग रहें, यह अब चल सकनेवाला नहीं है। जापान, हिन्दुस्तान और कई देश सोचते हैं कि अपने देश में आबादी बढ़ गयी है तो क्या किया जाय? लेकिन रूस सोचता है कि अपने देश के पास बहुत ज्यादा जमीन पड़ी है, इसलिए आबादी बढ़नी चाहिए। वह आबादी बढ़ाने के लिए उत्तेजन भी देता है याने दुनिया के एक हिस्से में आबादी न बढ़े, इसकी कोशिश और दूसरे हिस्से में बढ़ाने की कोशिश चल रही है। ऐसी हालत ज्यादा दिन चल सकनेवाली नहीं है।

आस्ट्रेलिया की जमीन पर चीन और जापान का भी हक

हमारी यात्रा में आस्ट्रेलिया के एक भाई आये थे। उनसे हमने कहा कि जमीन की मालकियत किसीकी भी नहीं हो सकती, यही भूदान-यज्ञ का बुनियादी उसूल है। हवा और पानी की तरह जमीन भी सबकी है। भूदान-यज्ञ के मानी है आस्ट्रेलिया की जमीन पर चीन का और जापान का हक! मेरी यह बात सुनकर वह भाई खुश हुआ। लेकिन उसने पूछा कि क्या ऐसा होगा? क्या हमारे आस्ट्रेलिया वाले इसे कबूल करेंगे? मैंने जवाब दिया कि वे कबूल करेंगे या नहीं, यह आपको देखना होगा। लेकिन यह समझ लीजिये कि अगर यह बात कबूल नहीं हुई तो विज्ञान के जमाने की तसल्ली नहीं होगी। विज्ञान कुल दुनिया को एक करके ही छोड़ेगा। अगर ऐसा नहीं होगा तो मानव जाति को खत्म होना होगा। आज जैसे हमारे यहाँ एक सूबे का नागरिक सारे हिंदुस्तान का नागरिक है, वैसे ही एक देश का नागरिक सारी दुनिया का नागरिक बने, यही हमें करना है। ये सारी सीमाएँ टूट जायेंगी। वीसा, पासपोर्ट वगैरह कुछ नहीं रहेगा। इन्सान दुनिया में कहीं भी जा सकेगा और प्यार से खिदमत करके अपनी जिंदगी बसर कर सकेगा। इस तरह की दुनिया बनेगी, तभी विज्ञान के जमाने का समाधान होगा।

विज्ञान के साथ अहिंसा अनिवार्य

लोग जानते हैं कि मेरे कुल विचार की बुनियाद अमन, तशद्दुद, अहिंसा पर है। मैं अहिंसा पर इतना प्यार क्यों करता हूँ? इसका जवाब यह है कि मेरा विज्ञान पर प्यार है, इसीलिए अहिंसा पर भी प्यार है। मैं चाहता हूँ कि विज्ञान खूब बढ़े और वह बढ़नेवाला है ही। उसे कोई नहीं रोक सकता। अगर हम चाहते हैं कि विज्ञान बढ़े तो विज्ञान के साथ अहिंसा का होना लाजमी है। विज्ञान और हिंसा, तशद्दुद इकट्ठा हो जाय तो इन्सान का खात्मा हो जायगा। मैं राह देख रहा हूँ उस दिन की, जब एटॉमिक इनर्जी (अणुशक्ति) हासिल होगी और हर गाँव में पहुँचेगी। वह एक डीसेंट्रलाइज्ड (विकेन्द्रित) ताकत है, जो गाँव को अपने पाँवों पर खड़ा कर सकती है। बहुतों का खयाल है कि सर्वोदय दकियानूस, पुराने जमाने का विचार है, जो विज्ञान को पसंद नहीं करता। लेकिन यह बिलकुल ही गलत खयाल है। मैंने बार-बार कहा है कि विज्ञान पर अगर किसी का हक है तो सर्वोदय का ही है, दूसरों का नहीं है। अगर दूसरों के हाथ में विज्ञान की ताकत जायगी तो वह मनुष्य को खत्म करनेवाली साबित होगी। अगर वह ताकत सर्वोदय के साथ जुड़ जायेगी तो इन्सानियत पनपेगी, इन्सान का भला होगा।

निःस्वार्थ प्रेम

ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक भी कौड़ी या पैसा खर्च करना पड़े, इससे अधिक दुःखदायक घटना कोई नहीं हो सकती। बच्चे के दिल में माता के स्तनपान की जितनी इच्छा है, उतनी ही इच्छा माता को भी बच्चे को स्तनपान कराने की होती है। कल अगर माताएँ लड़कों से फीस लिए बगैर दूध न दें तो दुनिया की क्या हालत होगी?

एक ओर गाँव, दूसरी ओर विश्व

आज जो छोटे-छोटे देश बने हैं, वे इसके आगे नहीं टिकनेवाले हैं। अब कुल दुनिया एक होनेवाली है। इसलिए सारी दुनिया एक है, यह सोचकर हमें अपना कारोबार चलाना चाहिए। फिर चाहे हम देश का कारोबार चलाते हों या सूबों का या जिले का। हमें इसी ढंग से कारोबार चलाना होगा। हमें समझना होगा कि हम कुल दुनिया के जुज हैं और इसी नाते से देश को डेवलप (विकसित) करना होगा, तभी देश का काम चलेगा। नहीं तो हम अपने देश को विकसित नहीं कर सकेंगे। दुनिया से अलग रहकर अपनी तरक्की करने की कोशिश करनेवाले लोग हार खायेंगे और मार खायेंगे। हम विज्ञान का स्वागत, इस्तेकबाल करते हैं और उसका इन्सान की जिन्दगी की तरक्की के लिए अच्छा उपयोग करना चाहते हैं। लेकिन विज्ञान का अच्छा उपयोग तभी हो सकेगा, जब उसके साथ अहिंसा जुड़ेगी और डीसेन्ट्रलाइज्ड (विकेन्द्रित) योजना जुड़ेगी।

मैं तो कहता हूँ कि एक बाजू गाँव रहेगा और दूसरी बाजू दुनिया। दोनों के बीच की जो कड़ियाँ हैं, वे मजबूत नहीं रहेंगी, ढीली हो जायेंगी। मजबूत चीज होगी, एक बाजू वन वर्ल्ड (एक विश्व), जय-जगत् और दूसरी बाजू गाँव, जय-ग्रामदान। दोनों के बीच की स्टेट, सूबा आदि जो कड़ियाँ हैं, वे फैलती रहेंगी, दिन-ब-दिन आगे बढ़ती जायेंगी।

कौमियत, मजहब, जबानें वगैरह चीजों का इन्सान के साथ ताल्लुक है, उनका हमें उपयोग करना पड़ता है। ये हमारे हाथ के औजार हैं, लेकिन हम उनके हाथ में नहीं जायेंगे।

[चालू]

अनुक्रम

१. सियासत और मजहबी तरीकों से समस्या का हल ...
सोपौर २९ जुलाई '५९ पृष्ठ ५९७,
२. राजनीति के बदले लोकनीति की स्थापना करें.
श्रीनगर २ अगस्त '५९ „ ५९८
३. शिक्षक अपनी जिम्मेदारी समझकर समाज का ...
श्रीनगर ४ अगस्त '५९ " ६०२.
४. सर्वोदय-विचार केवल अच्छा ही नहीं, व्यावहारिक ...
श्रीनगर ३ अगस्त '५९ " ६०३.

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी